Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 SHISRRJ | Volume 8 | Issue 2
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

पूर्वांचल क्षेत्र के प्रमुख धार्मिक तीर्थ पर्यटन स्थलों के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव का एक अध्ययन

Kavita Yadav
Research Scholar , Department of Geography
Prof. Upma Chaturvedi
Avadh Girl's Degree College Lucknow, India

Article Info

Accepted : 01 March 2025
Published : 15 March 2025

Publication Issue :
March-April-2025
Volume 8, Issue 2

Page Number : 08-18

सारांश:

शोधकर्ती द्वारा चयनित शोध विषय "पूर्वांचल क्षेत्र के प्रमुख धार्मिक तीर्थ पर्यटन स्थलों के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव का एक अध्ययन है। समाज, सांस्कृतिक गतिशीलता के माध्यम से जीता है। किसी भी समाज के गतिशील पहलू सांस्कृतिक लक्षणों को अपनाने और अस्वीकार करने के द्विभाजन के माध्यम से परिलक्षित होते हैं। इसलिए, यह लोकप्रिय रूप से कहा जाता है कि कोई भी समाज स्थिर नहीं होता, बल्कि वह स्वभाव से गतिशील होता है। किसी भी समाज की गतिशीलता की गति और स्तर विभिन्न बाधाओं और लोगों द्वारा सामना किए गए अवसरों पर निर्भर करती है। किसी समाज में सांस्कृतिक परिवर्तन निश्चित प्रक्रियाओं से होकर गुजरता है; हालाँकि, यह समान और समरूप निर्देशों का पालन नहीं करते हैं। पूर्वांचल क्षेत्र में धार्मिक तीर्थ पर्यटन में सामाजिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परंपराओं के संरक्षण और प्रसारण में सुधार करने की क्षमता है। इन संसाधनों के संरक्षण और स्थायी प्रबंधन में योगदान करने से आमतौर पर स्थानीय विरासत की रक्षा करने या स्थानीय संस्कृतियों को पुनर्जीवित करने का मौका मिल सकता है, उदाहरण के लिए सांस्कृतिक कला और शिल्प को पुनर्जीवित करके। तीर्थ पर्यटन स्थल न केवल हमारे धार्मिक विश्वास के लिए एक गंतव्य हैं, बल्कि वे हमारी राष्ट्रीय एकता को भी मजबूत करते हैं और भाईचारे को भी बढ़ावा देते हैं। समझ में आना चाहिए जब इनका उपयोग विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिए भी किया जाना चाहिए और हमारी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करना चाहिए। भगवान राम की जन्मस्थली के रूप में प्रसिद्ध उत्तर प्रदेश में आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण कई स्थल हैं। उत्तर प्रदेश की लगभग हर गली आध्यात्मिकता और इतिहास के संदर्भों से भरी हुई है। जिसमें सबसे महत्वपूर्ण

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

अयोध्या, प्रयागराज, मथूरा, काशी आदि है। जिस पर शोध पत्र में गहन विचार करने का प्रयास किया गया है।

शब्दावली: पूर्वांचल क्षेत्र, धार्मिक तीर्थ पर्यटन स्थल, सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव, आदि।

पृष्ठभूमि:

पूर्वांचल के आठ मंडलों का गठन 79807 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला है. इसमें जनसंख्या घनत्व 943 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी तथा लिंगानुपात 956 है। प्रस्तावित पूर्वांचल राज्य में आठ मण्डल- वाराणसी, इलाहाबाद, मिर्जापुर, गोरखपुर, आजमगढ़, बस्ती, फैजाबाद व देवीपाटन के 26 जिले हैं. वाराणसी, चन्दौली, गाजीपुर, जौनपुर, आजमगढ़, मऊ, बलिया, इलाहाबाद, कौशाम्बी, प्रतापगढ़, गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, महराजगंज, बस्ती, संतकबीरनगर, सिद्धार्थनगर, बलरामपुर, गोंडा, फैजाबाद, अकबरपुर, सुल्तानपुर, अमेठी, मिर्जापुर, भदोही, व सोनभद्र शामिल हैं। इस प्रकार इस भाग में में 32 लोकसभा क्षेत्र व 155 विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं। गोरखपुर, वाराणासी और इलाहाबाद जैसे महानगर हैं। इसके राजनीतिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक महत्व को समझना चाहिए. प्रशासनिक रूप से पूर्वांचल में कानून व्यवस्था पर बहुत काम करना है. अलग से औद्योगिक पुलिस डिविजन बना कर उद्योग और पूंजी निवेश को आसान और सुरक्षित बनाया गया है।

आगंतुकों के लिए पर्यटन के लाभ असंख्य हैं वे अदूषित प्रकृति और परिदृश्य, पर्यावरणीय गुणवत्ता (स्वच्छ हवा और पानी), कम अपराध दर वाला एक स्वस्थ समुदाय, समृद्ध और प्रामाणिक स्थानीय संस्कृति और परंपराओं का आनंद ले सकते हैं। पर्यटन विभाग उत्तर प्रदेश को अध्ययन क्षेत्र के साथ-साथ पूरे राज्य में बड़ी संख्या में देशी और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने और आकर्षित करने के लिए विभिन्न योजनाओं और योजनाओं को लागू करके सुविधाएं प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण पहल और कदम उठाने चाहिए। कई स्थापत्य स्मारक और विरासत स्थल हैं जो उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों में पाए जाते हैं। बहुत सारे तीर्थ स्थल भी हैं जो उत्तर प्रदेश में स्थित हैं और कई तीर्थयात्री पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य उत्तर प्रदेश में धार्मिक तीर्थ पर्यटन से जुड़े सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव की पहचान करना है। यह देखा गया है कि रहस्यमय आकर्षण होने के बावजूद उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र को अभी भी पर्यटकों से प्रतिक्रिया नहीं मिली है।

वर्तमान सरकार ने वाराणसी, अयोध्या और प्रयागराज के कलेवर को बदलकर उसे विश्व में जो नई पहचान दिलाई है उसका लाभ वाराणसी, अयोध्या और प्रयागराज समेत आसपास के अन्य जिलों को भी मिल रहा है। वाराणसी, अयोध्या और प्रयागराज में आने वाले पर्यटक पड़ोसी जिलों के आध्यात्मिक,धार्मिक और प्राकृतिक स्थलों को भी पसंद कर रहे है। वर्ष 2023 में पूर्वांचल का टॉप रिलीजियस व टूरिस्ट डेस्टिनेशन वाराणसी रहा।

वही, दूसरे नंबर पर मिर्ज़ापुर का विंध्याचल और तीसरे पायदान पर मिर्ज़ापुर का ही अष्टभुजा मंदिर रहा। इसके अतिरिक्त, संत रविदास नगर (भदोही) में स्थित सीतामढ़ी चौथे नंबर पर और प्राकृतिक सौंदर्य से भरा सोनभद्र पांचवे स्थान पर रहा। वर्तमान सरकार ने बनारस, अयोध्या और प्रयागराज तथा उसके आस-पास के जिलों की कनेक्टिविटी में इजाफा करने के साथ इन क्षेत्रों में पर्यटन विकास की विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य किया है जिसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं और पर्यटक कम समय में ज्यादा से ज्यादा डेस्टिनेशन एक्सप्लोर कर रहे । प्रयागराज का महाकुंभ विश्व में प्रमुख धार्मिक मेले में से एक रहा है।

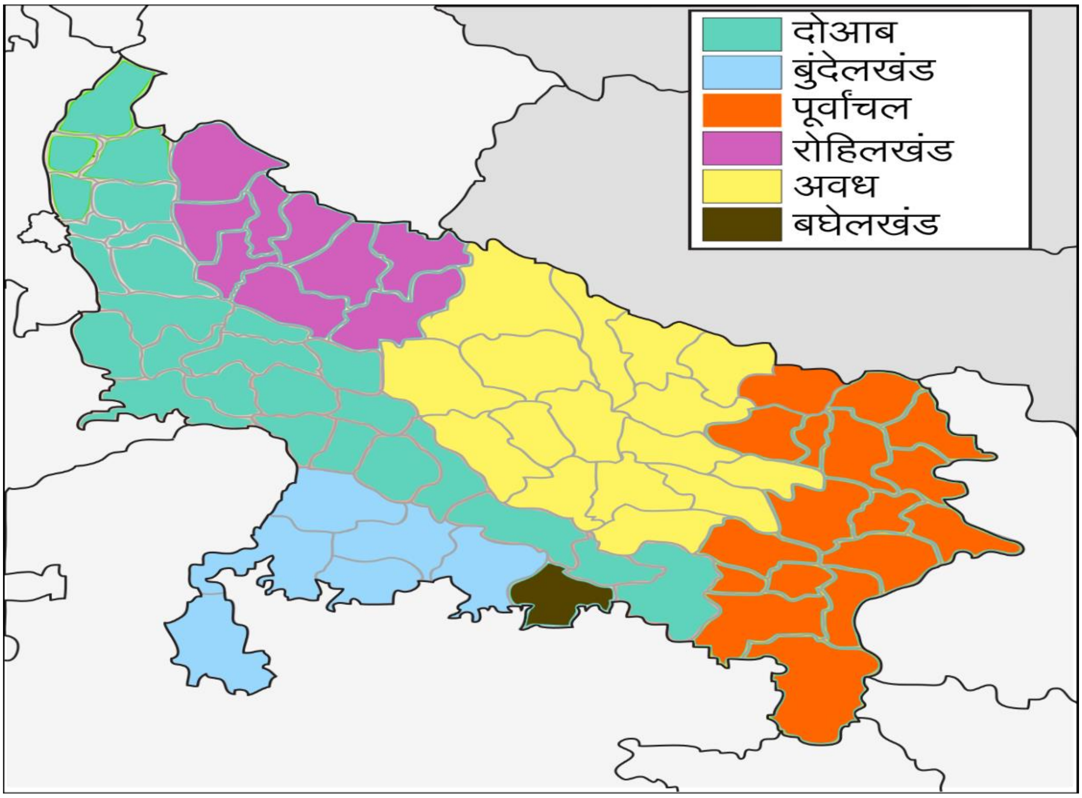

उद्देश्य:

1.पूर्वाचल क्षेत्र के प्रमुख धार्मिक तीर्थ पर्यटन स्थलों का अध्ययन करना।

2.पूर्वाचल क्षेत्र के प्रमुख धार्मिक तीर्थ पर्यटन स्थलों के सकारात्मक और नकारात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध समस्या कथन:

शोधकर्ती द्वारा चयनित शोध विषय **"पूर्वांचल क्षेत्र के प्रमुख धार्मिक तीर्थ पर्यटन स्थलों के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव का एक अध्ययन, है।**

पूर्वांचल क्षेत्र के प्रमुख धार्मिक तीर्थ पर्यटन स्थल:

1.वाराणसी

यह भारत के सबसे आध्यात्मिक तीर्थ स्थानों और पर्यटन स्थलों में से एक है क्योंकि इसे भगवान शिव का निवास स्थान कहा जाता है। कुछ हिंदू मानते हैं कि गंगा नदी दक्षिण से उत्तर की ओर बहकर भगवान शिव को अपनी भक्ति प्रदान करती है। विश्व की सबसे प्राचीन प्रसिद्ध नगरी काशी में 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक बाबा विश्वनाथ का ज्योतिर्लिंग है। पुरी में जगन्नाथ है तो काशी में विश्वनाथ। काशी को बनारस और वाराणसी भी कहते हैं। शिव और काल भैरव की यह नगरी अद्भुत है जिसे सप्तपुरियों में शामिल किया गया है। दो नदियों 'वरुणा' और 'असि' के मध्य बसे होने के कारण इसका नाम 'वाराणसी' पड़ा। गंगा के किनारे बसे इस नगर में देखने लायक बहुत कुछ है। इसे मोक्ष की नगरी भी कहा जाता है।

2. मथुरा :

यमुना नदी के तट पर स्थित मथुरा को आमतौर पर ब्रजभूमि या भगवान कृष्ण की स्वर्गीय जन्मभूमि के रूप में जाना जाता है। श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर में गर्भगृह नामक एक जेल कक्ष है, जिसे कृष्ण का सटीक जन्मस्थान कहा जाता है। हर साल जन्माष्टमी पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु इस मंदिर में दर्शन के लिए आते हैं। यहां जैन धर्म और बौद्ध धर्म के लिए भी एक पवित्र स्थल है। मथुरा में चौरासी एक जैन मंदिर है जो जैन धर्म और आध्यात्मिकता को बढ़ावा देता है। मंदिर की दीवारें जीवंत भित्तिचित्रों और मूर्तियों से ढकी हुई हैं, जो जैन इतिहास और कला की गवाही देती हैं। गीता मंदिर मथुरा के पास स्थित एक धार्मिक तीर्थ स्थल है। मंदिर में भगवान कृष्ण की एक सुंदर मूर्ति है। कुसुम सरोवर के बारे में कहा जाता है कि यह वह स्थान है जहाँ राधा और भगवान कृष्ण मिले थे। मथुरा में एक प्रसिद्ध मस्जिद है, जिसे जामा मस्जिद के नाम से जाना जाता है, जो लाल बलुआ पत्थर से बनी है मथुरा उत्तर प्रदेश का एक तीर्थ स्थल भी है। यह दुनिया भर के यात्रियों के लिए एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भी है। यमुना नदी के किनारे बसी भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा के आसपास गोकुल, वृंदावन, गोवर्धन, बरसान आदि गांव बसे हैं जो कि श्रीकृष्ण के जीवन लीलाओं के स्थल है। भारत की

सात प्राचीन नगरी अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांची, अवंतिका और द्वारका में से एक है मथुरा। पौराणिक साहित्य में मथुरा को अनेक नामों से संबोधित किया गया है जैसे- शूरसेन नगरी, मधुपुरी, मधुनगरी, मधुरा आदि। हरिवंश और विष्णु पुराण में मथुरा के विलास-वैभव का वर्णन मिलता है।

3. वृंदावन:

सेवा कुंज वह जगह है जहाँ कृष्ण ने राधा और गोपिकाओं के साथ रासलीला खेली थी, निधिवन वह जगह है जहाँ पवित्र युगल ने अपना ख़ाली समय बिताया था। भूतेश्वर महादेव और कई शक्तिपीठ भी यहीं स्थित हैं। वृंदावन इस्कॉन के लिए भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस पवित्र शहर में करीब 4,000 मंदिर हैं। वृंदावन के सबसे प्रमुख मंदिरों में रणजी मंदिर, राधा वल्लभ मंदिर, गोविंद देव मंदिर, बांके बिहारी मंदिर और पागल बाबा मंदिर शामिल हैं।. वृंदावन, मथुरा के पास स्थित वृंदावन श्रीकृष्णी की लीला भूमि है। यहां पर बांके बिहारीजी का मंदिर है। इसके अलावा रंगनाथ मंदिर, केशी घाटी, मदनमोहन मंदिर, गोविंद देव मंदिर, श्रीराधा बिहारी आस्था सखी मंदिर, निधिवन, प्रेम मंदिर, हरे रामा हरे कृष्ण मंदिर, इस्कॉन मंदिर, पागल बाबा मंदिर आदि अनेक प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिर है।

4. प्रयागराज:

गंगा के किनारे स्थित सभी तीर्थों में श्रेष्ठ है प्रयागराज। इसे पहले इलाहाबाद कहते थे। यहां गंगा और यमुना का मिलन होता है और सरस्वती को यहां अदृश्य माना गया है। त्रिवेणी के इसी स्थान पर कुंभ का आयोजन होता है क्योंकि यहां पर अमृत की बूंदें गिरी थी। यहां हजारों वर्ष से विद्यमान अक्षयवट और सभी संतों के मठ और आश्रम है। यहां प्रजापिता ब्रह्मा ने दशाश्वमेध यज्ञ किया था। प्रयाग से सारे तीर्थ उत्पन्न हुए हैं। प्रयागराज में सैंकड़ों धार्मिक स्थल भी है जिसमें नागवासुकी
मन्दिर, बेणी माधव मन्दिर, अलोपी मन्दिर आदि है।

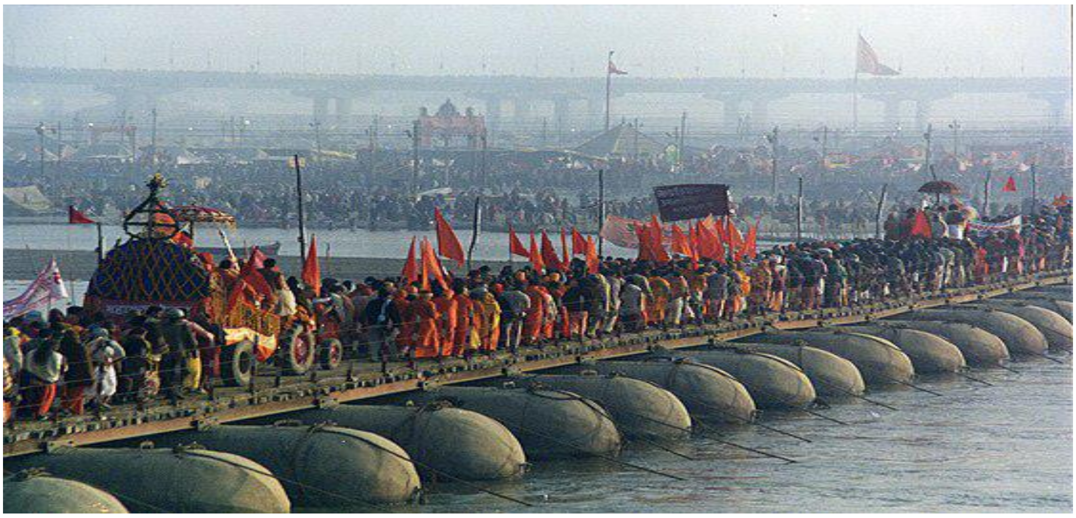

5 अयोध्या:

उत्तर प्रदेश में सरयू नदी के तट पर बसा अयोध्या भारत के सबसे पवित्र शहरों में से एक है। अयोध्या को भगवान राम की जन्मभूमि कहा जाता है। अपने शांत घाटों के साथ, यह स्थान जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों (धार्मिक गुरुओं) में से 4 का घर भी है। रामकोट का ऐतिहासिक किला अयोध्या में भक्ति का मुख्य केंद्र है। ऐसा कहा जाता है कि भगवान राम के पुत्र कुश ने नागेश्वरनाथ मंदिर बनवाया था। मणि पर्वत, श्री विजय राघव मंदिर, स्वर्ग द्वार, त्रेता के ठाकुर, लक्ष्मण घाट और अन्य मंदिर भी पास में ही हैं। सरयू नदी के किनारे सप्तपुरियों में से एक अयोध्या भारत की सबसे प्राचीन नगरी है जहां प्रभु श्रीराम का जन्म हुआ था। कुछ विद्वानों के अनुसार प्राचीनकाल में अयोध्या कोसल क्षेत्र के एक विशेष क्षेत्र अवध की राजधानी थी इसलिए इसे 'अवधपुरी' भी कहा जाता था। हिन्दू, जैन, बौद्ध और सिख धर्म का यह प्रमुख स्थल है। अथर्ववेद में अयोध्या को 'ईश्वर का नगर' बताया गया है।

6.सारनाथ :

सारनाथ वह पवित्र स्थल है जहाँ भगवान बुद्ध ने (महा-धर्म-चक्र प्रवर्तन) धर्म चक्र की स्थापना की थी। यह पवित्र स्थान वाराणसी से 10 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित है। सारनाथ पहले मठ के निर्माण और धार्मिक दर्शन (धम्म) की एक नई प्रणाली की स्थापना का स्थल भी है। सारनाथ को जैन धर्म के लोग तपस्या स्थल और 11वें तीर्थंकर श्रेयमशनाथ की समाधि स्थल के रूप में भी पूजते हैं। चौखंडी स्तूप वह स्थान है जहाँ भगवान बुद्ध ने पहली बार अपने अनुयायियों को इकट्ठा किया था। प्राचीन नगर सारनाथ बौद्ध धर्म के लिए बहुत महत्व का स्थान है। सारनाथ वाराणसी शहर से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर पूर्व की दिशा में स्थित है। ऐसी मान्यता है कि भगवान बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपना प्रथम उपदेश सारनाथ में ही दिया था। बौद्ध धर्म के अलावा सारनाथ में हिंदू धर्म और जैन धर्म के बीच कई विशाल मंदिर देखने को मिलते हैं जिन्हें किसी काल में नष्ट कर दिया गया था।

7. लखनऊ:

लखनऊ में लोगों, संस्कृतियों और परंपराओं का ऐसा विविध संग्रह है, इसलिए शहर में पूजा के लिए अनगिनत घर हैं। लखनऊ को "नवाबों का शहर" भी कहा जाता है। लखनऊ में धार्मिक रूप से इच्छुक लोग कई तरह की चीज़ें कर सकते हैं, जैसे 15वीं शताब्दी में बनी जामा मस्जिद में नमाज़ पढ़ना, नए बने बालाजी मंदिर की विस्मयकारी वास्तुकला को निहारना और 15वीं शताब्दी में बने लगभग 300 साल पुराने चंद्रिका देवी मंदिर और संकट मोचन हनुमान मंदिर में जाना। ये मंदिर और दरगाहें, जो अत्यधिक आध्यात्मिकता और धार्मिकता से भरी हुई हैं, अपनी शानदार वास्तुकला और शानदार इतिहास से आपको विस्मित और आश्चर्यचकित कर देंगी।

पूर्वांचल क्षेत्र के पर्यटन स्थलों के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव:

किसी समुदाय या एक निश्चित क्षेत्र में रहने वाले लोगों का व्यापक समूह है, जिसकी परंपरा, संस्था, गतिविधियाँ और रुचियाँ समान होती हैं, उसे समाज कहा जाता है। वास्तव में समान पहचान रखने वाले लोगों के समूह के बीच संबंध की प्रणाली को समाज कहा जाता है। यह एक परिवार/इलाके की तरह छोटा या एक पूरे राष्ट्र की तरह बड़ा हो सकता है। संस्कृति उस समाज की प्रथाएँ हैं। यह समाज के लोगों को एक साथ बांधे रखती है। इसमें इनके आचार, नैतिकता, मान्यताएँ, मूल्य और मानक शामिल हैं। एक अच्छा आचरण, सामाजिक संबंध निर्माण का स्वीकार्य मार्ग है। इसमें दूसरों के लिए सम्मान, देखभाल और विचार शामिल होते हैं। नैतिकता लोगों के एक समूह या एक समाज द्वारा स्वीकार्य नियमों, सिद्धांतों और कर्तव्यों का एक समूह है, जो सामान्यतः धर्म से स्वतंत्र है। विश्वास व्यवहार की नींव है। व्यवहार एक व्यक्ति और समाज के दृष्टिकोण और सोच की प्रक्रिया को निर्धारित करता है। व्यवहार वह तरीका है, जिसमें कोई व्यक्ति या समाज के सदस्य व्यवहार करते हैं या कार्य करते हैं। इसे आयोजन, घटना या एक प्रतिक्रिया के संदर्भ के साथ देखा जाता है। इसलिए यह सदस्यों की एक प्रतिक्रिया है। मानदंड समाज के औपचारिक नियम होते हैं। यह सद्भाव बनाए रखने में समुदाय, समूह या समाज के सदस्यों को विनियमित करते हैं। मूल्य वे आदर्श हैं, जो समाज में सभी के ऊपर समान रूप से लागू होते है, जैसे ईमानदारी, सम्मान, करुणा ये मूल्य मानदंडों की नींव की ईंटें हैं। ये सामाजिक व्यवहार और समाज के लोगों के आचरण के कुछ बुनियादी नियम हैं। जब अधिकांश लोग सुदूर स्थानों से आते हैं और किसी भी क्षेत्र के स्थानीय निवासियों के साथ बातचीत करते हैं, तो वे वहाँ के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते हैं। पारस्परिक क्रियाओं के कारण मूल्य प्रणाली, व्यवहार, स्वदेशी पहचान में बदलाव दिखाई पड़ते हैं।समुदाय संरचना, पारिवारिक संबंध, सामूहिक परंपरागत जीवन-शैली, समारोहों और नैतिकता में विचलन देखे जाते हैं।

सकारात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव:

पर्यटन के सकारात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव दिखाई पड़ते हैं। पर्यटन के परिणामस्वरूप मेजबान समुदाय को कई लाभ होते हैं। इसमें स्थानीय व्यवसायों के लिए अवसर जैसे आर्थिक लाभ शामिल हैं जो आगंतुकों की बढ़ती संख्या के बीच व्यापार को बढ़ाने की अनुमति देता है और फिर विभिन्न स्थानीय व्यवसायों को विकसित करता है। इसके अलावा, पर्यटन रोजगार के अवसर भी लाता है, क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को बढ़ाता है और स्थानीय सरकार के लिए राजस्व बनाता है। पर्यटक सार्वजनिक सेवाओं का भी उपयोग करते हैं , जिससे स्वास्थ्य, पुलिस और अग्निशमन विभाग जैसी सार्वजनिक सेवाओं के लिए धन का सृजन होता है, साथ ही सार्वजनिक परिवहन की मांग भी बढ़ती है। पार्क और बेंच जैसी अन्य सार्वजनिक सुविधाएँ भी समुदाय द्वारा पर्यटकों के लिए अच्छी तरह से रखी जाती हैं, जिससे मेजबान समुदाय के समग्र सौंदर्य में सुधार होता है। अधिक

सामाजिक स्तर पर, पर्यटन अंतर-सांस्कृतिक संपर्क को बढ़ावा देता है। पर्यटक अक्सर स्थानीय लोगों से जुड़ते हैं और उनसे सीखते हैं। पर्यटन स्थानीय लोगों में गर्व भी बढ़ा सकता है जो अपने समुदाय को दिखाना चाहते हैं कि उन्होंने यात्रा करने के लिए चुना है। लोगों की संख्या में वृद्धि से अधिक सामाजिक स्थान और अनुभव भी बनते हैं जहाँ स्थानीय लोग और पर्यटक बातचीत कर सकते हैं। मनोरंजन और मनोरंजक सुविधाएँ एक-दूसरे के साथ मेलजोल और जुड़ने के अधिक अवसर प्रदान करेंगी। पर्यटन मेजबान समुदाय के लिए फायदेमंद हो सकता है क्योंकि यह सांस्कृतिक इतिहास, स्थानीय विरासत स्थलों और रीति-रिवाजों को संरक्षित करने के लिए वित्तीय साधन और प्रोत्साहन प्रदान करता है। यह स्थानीय शिल्प, पारंपरिक गतिविधियों, गीतों, नृत्य और मौखिक इतिहास में रुचि को उत्तेजित करता है । यह समुदाय को व्यापक दुनिया, नए विचारों, नए अनुभवों और सोचने के नए तरीकों के लिए भी खोलता है।

नकारात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव:

विशेष गंतव्य स्थानों पर पर्यटन के कई नकारात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव पड़ते हैं। उनमें से महत्वपूर्ण निम्नलिखित हैं ।

1.पारिवारिक संरचना के बंधन संपर्क को कम करता है और एकाकी परिवार की मान्यता पर बल देता है। और यह शहरीकरण को प्रोत्साहित करता है।

2.भीड़-भाड़ और स्थानीय लोगों के लिए मनोरंजन सुविधाओं की कमी के कारण पर्यटकों से टकराव और असंतोष होता है।

3.कुछ पर्यटन स्थलों पर मादक पदार्थों का सेवन और वेश्यावृत्ति बढ़ता हुआ दिखाई पड़ सकता है।

4.पर्यटन उद्योग में वृद्धि के कारण बच्चों, युवा और महिलाओं का व्यावसायिक लैंगिक शोषण, दुनिया के कई भागों में बढ़ा है। बच्चों को वेश्यालय में अवैध रूप से फंसाया जाता है और सेक्स गुलामी में ढकेल दिया जाता है।

5.विदेशी पर्यटकों के साथ बदसलूकी और बलात्कार पर्यटन को बाधित करता है।

6.पर्यटकों का कुछ स्थानों और होटलों/ हवाई अड्डों पर परंपरागत रूप से स्वागत किया जाता है। कभी-कभी, पारंपरिक स्वागत और आतिथ्य मानदंडों का व्यवसायीकरण भी दिखलाई पड़ता है, जो उन चीजों का मजाक ज्यादा लगता है।

7.विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के लोगों के साथ मेल-जोल होने से गंतव्य क्षेत्र की अपनी संस्कृति में ह्रास परिलक्षित होता है। बाद में, यह सांस्कृतिक पहचान हेतु लोगों में संघर्ष की भावना पैदा करता है।

8.पर्यटक स्थानीय अकुशल लोगों की तुलना में अधिक धनी होते हैं। यह पैसे कमाने और पर्यटकों द्वारा लाए गए उपकरणों को पाने के लिए लालच को जन्म देता है। इस तरह का लालच स्थानीय लोगों को अपराध करने के लिए मजबूर कर सकता है।

9.स्थानीय लोगों के नैतिक आचरण में गिरावट की प्रवृत्ति दिखाई देती है और विशेष रूप से स्थानीय युवा विदेशी की नकल करने का प्रयास करते हैं। वे धूमपान, शराब पीने, जुआ खेलने, लड़की का हाथ पकड़कर चलने या खुले में चुंबन करने का प्रयास करने आदि पर्यटकों जैसी आदतों को अपनाने की कोशिश करते हैं।

10• विदेशी पर्यटकों द्वारा स्थानीय नियमों और रूढ़ियों का उल्लंघन करना मेज़बान और मेहमान के बीच संघर्ष को जन्म देता है।

11.स्थानीय भाषा और बोली अपनी शुद्धतायुक्त पहचान खो रही है, एक नई मिश्रित भाषा का जन्म हो रहा है।

12.सांस्कृतिक भिन्नता के कारण सांस्कृतिक टकराव हो रहे हैं। जातीयता, धर्म, मूल्यों, व्यवहार, जीवन-शैली और समृद्धि के स्तर में अंतर के कारण भी टकराव का जन्म हो रहा है।

13.कई पर्यटक विभिन्न जीवन-शैलियों के साथ विभिन्न समाजों से आते हैं। वे हर तरह के सुख की तलाश करते हैं और अधिक पैसा खर्च करते हैं। कभी-कभी उनका व्यवहार भी बहुत ही अहंकारपूर्ण होता है। यहाँ तक कि कभी-कभी उनके अपने समाज में भी वे व्यवहार स्वीकार्य नहीं हो सकता, जहाँ से वे आए हैं।

14.आर्थिक रूप से कम विकसित देशों में विशेषकर 'संपन्न' और 'वंचितों' के बीच अंतर बढ़ रहा है 15.यह सामाजिक तनाव और कई बार जातीय तनाव को जन्म देता है।

16.अज्ञानता या लापरवाही के कारण, पर्यटक अक्सर स्थानीय रूढ़ियों और नैतिक मूल्यों का सम्मान करने में असफल होते हैं। यह स्थानीय लोगों में क्रोध उत्पन्न कर सकता है।

निष्कर्ष एवं परिणाम:

अतः उपरोक्त व्याख्या से स्पष्ट होता है कि धार्मिक तीर्थ स्थल के कारण समाज और संस्कृति पर प्रभाव पड़ता है। जो सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में दिखाई पड़ता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि रोजगार के संदर्भ में मापा जाने वाला तीर्थ पर्यटन का सामाजिक महत्व बहुत बड़ा है। इसने यह भी स्पष्ट किया है कि तीर्थयात्रा पर्यटन संबंधी हस्तक्षेप स्थानीय समुदायों में जीवन स्तर को ऊपर उठाने और गरीबी को कम करने में भूमिका निभा सकते हैं। हालांकि, सामाजिक सांस्कृतिक विकास में तीर्थ पर्यटन के संभावित लाभों का लाभ उठाने वाली नीतियों को विकसित और कार्यान्वित करना अक्सर आवश्यक होता है। वर्तमान सरकार ने वाराणसी, अयोध्या एवं प्रयागराज के कलेवर को बदलकर उसे विश्व में जो नई पहचान दिलाई है उसका लाभ वाराणसी, अयोध्या और प्रयागराज समेत आसपास के अन्य जिलों को भी मिल रहा है। वाराणसी, अयोध्या और प्रयागराज में आने वाले पर्यटक पड़ोसी जिलों के आध्यात्मिक,धार्मिक और प्राकृतिक स्थलों को भी पसंद कर रहे है। वर्ष 2023 में पूर्वांचल का टॉप रिलीजियस व टूरिस्ट डेस्टिनेशन वाराणसी रहा। वही, दूसरे नंबर पर मिर्ज़ापुर का विंध्याचल और तीसरे पायदान पर मिर्ज़ापुर का ही अष्टभुजा मंदिर रहा। इसके अतिरिक्त, संत रविदास नगर (भदोही) में स्थित सीतामढ़ी चौथे नंबर पर और प्राकृतिक सौंदर्य से भरा सोनभद्र पांचवे स्थान पर

रहा। वर्तमान सरकार ने बनारस और प्रयागराज तथा उसके आस-पास के जिलों की कनेक्टिविटी में इजाफा करने के साथ इन क्षेत्रों में पर्यटन विकास की विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य किया है जिसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं और पर्यटक कम समय में ज्यादा से ज्यादा डेस्टिनेशन एक्सप्लोर कर रहे। प्रयागराज में 2025 में आयोजित महाकुंभ विश्व में प्रमुख धार्मिक मेले में से एक रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. मैरियट, एम. (एड.) (1955). विलेज इंडिया: स्टडीज इन द लिटिल कम्युनिटी यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस,
2. सिंह, वाई. (1973). भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण: सामाजिक न्याय का एक व्यवस्थित अध्ययन परिवर्तन. दिल्ली: थॉमस प्रेस इंडिया लिमिटेड,
3. श्रीनिवास, एम.एन. (1952, 1965 पुनर्मुद्रण), दक्षिण भारत के कूर्ग में धर्म और समाज, बॉम्बे: क्लेरेंडन प्रेस, ऑक्सफोर्ड, एशिया पब्लिशिंग हाउस,
4. आधुनिक भारत में जाति. बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस,
5. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली: ओरिएंट लॉन्गमैन लिमिटेड
6. बाशम ए.एल. (1963), द वंडर दैट वाज़ इंडिया, पिकाडोर इंडिया.ई.एस,
7. बेंडापुडी, एस. (1958), भारत का व्यक्तित्व: भारत और पाकिस्तान की पूर्व और आद्य-ऐतिहासिक नींव: बड़ौदा कला संकाय, महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा,
8. मेयो, के. (1927), मदर इंडिया, ब्लू रिबन बुक्स, न्यूयॉर्क.
9. रुडयार्ड, के. (1889),"द बैलाड ईस्ट एंड वेस्ट", पायनियर, 2 दिसंबर.
10. सोफ़र, डी. (1980), भारत की खोज: समाज और संस्कृति पर भौगोलिक परिप्रेक्ष्य, इथाका, कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस,।